513262 Seat No._____

M. A. (Part - II) Examination

April / May – 2003

Hindi : Paper - V

(Subsidiary) (आधुनिक कविता)

Time : **3** Hours] [Total Marks : **100**

सूचना : सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं।

१ 'साकेत' के नवम सर्ग के अंगीरस के रूप में विप्रलंभ शृंगार की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

अथवा

१ *राम* काव्य परंपरा के अंतर्गत 'साकेत' के महत्व को प्रस्थापित कीजिए।

२ '*केदारनाथ सिंह* हिंदी समकालीन कविता के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं' – इस कथन को सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

अथवा

२ '*बाघ*' कविता के रूपक की प्रामाणिकता को स्पष्ट कीजिए।

३ गीतिकाव्य की विशेषताओं के आधारपर *निराला* के गीतों की समीक्षा कीजिए।

अथवा

३ *निराला* की प्रगतिवादी कविताओं की विशेषताएँ सोदाहरण निरूपित कीजिए।

४ '*आत्मजयी*' की कथावस्तु का प्रेरणास्रोत स्पष्ट करते हुए उसमें युगीन संदर्भों को रेखांकित कीजिए।

अथवा

४ चरित्रांकन की दृष्टि से '*आत्मजयी*' का मूल्यांकन कीजिए।

५ ससंदर्भ व्याख्या :

(१) नयनों को रोने दे, मन, तू संकीर्ण न बन, प्रिय बैठे हैं
आँखों से ओझल हो, गए नहीं वे कहीं, यहीं पैठे हैं।
आँख, बता दे तू ही, तू हँसती या यथार्थ रोती है ?
तेरे अधर–दशन ये, या तू भर अश्रुबिन्दु ढोती है ?

अथवा

(१) तप तुझसे परिपक्वता पाकर भले प्रकार,
बनें हमारे फल सकल, प्रिय के ही उपहार।
पड़ी है लम्बी–सी अवधि पथ में, व्यग्र मन है,
गला रूखा मेरा, निकट तुझसे आज घन है।
मुझे भी दे दे तू स्वर तनिक सारंग, अपना,
करुँ तो मैं भी हा ! स्वरित प्रिय का नाम जपना।

(२) मैं पूरी ताकत के साथ
शब्दों को फेंकना चाहता हूँ आदमी की तरफ
यह जानते हुए कि आदमी का कुछ नहीं होगा
मैं भरी सड़क पर सुनना चाहता हूँ वह धमाका
जो शब्द और आदमी की टक्कर से पैदा होता है
यह जानते हुए कि लिखने से कुछ नहीं होगा
मैं लिखना चाहता हूँ।

अथवा

(२) पर सब कृतज्ञ थे
उस महान सूर्य के
कि दिन दहाड़े
जब सब लगे थे अपने–अपने काम में
तो सबको थोड़ा–थोड़ा
दिख गया बाघ !

(३) हवा चली, गले खुशबू लगी कि वे बोले,
समीर – सार के होते हैं ये बहार के दिन।
नवीनता की आँखें चार जो हुईं उनसे,
कहा कि प्यार के होते हैं ये बहार के दिन।

अथवा

(३) नव गति, नव लय, ताल–छन्द नव,
नवल कंठ, नव जलद–मन्द्ररव;
नव नभ के नव विहग–वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे !

(४) उस निरपराध आँखों के अवसान कें प्रति दिन
एक सूर्य की बलि दी जाती,
और वह उस व्यर्थ वेदना की
छटपटाती पराकाष्ठा से गुजरता–
बिना अस्त हुए
बिना शांति पाए।

अथवा

(४) ओ भयानक अपच्छाया
देह के सीमांत पर तैनात
काली रात मुझको छोड़ दे,
मैं अजनबी हूँ
भूल से पकड़ा गया हूँ।

———————